Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 7 ~ Issue 4 (2019) pp: 58-60
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

पंडित मदन मोहन मानवीय के राजनैतिक विचार एवं संवैधानिक आंदोलन में विश्वास

ज़िले सिंह चौधरी

राजनीति विज्ञान विभाग, सत्यवती कालेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

R**eceived 02 Apr, 2019; **A**ccepted 14 Apr, 2019 © The author(s) 2019. **P**ublished with open access at **www.questjournals.org

परिचय

राजनीतिक व्यवस्था एक सामाजिक संस्था है जो किसी देश के शासन से संव्यवहार करती है और लोगों से इसका संबंध प्रकट करती है। राजनितिक कुछ मूलभूत सिद्धांतों का समुच्चय है जिसके इर्द-गिर्द राजनीति और राजनीतिक संस्थान विकसित होते हैं या देश को शासित करने हेतु संगठित होते हैं। राजनीतिक व्यवस्था में ऐसे तरीके भी शामिल होते हैं जिसके अंतर्गत शासक चुने या निर्वाचित होते हैं, सरकारों का निर्माण होता है तथा राजनीतिक निर्णय लिए जाते हैं। "मैं आप से ये निश्चय करने को कहता हूँ कि आप पूरी ताकत से दावा करेंगे कि आपको अपने राष्ट्र में की आपकी स्वछंदता ऐसी हो जैसे इंग्लिशमैन को इंग्लैण्ड में बढ़ने की है।"
यह विचार हमारे देश के स्वतंत्र, एकरूपता एवं न्याय का समर्थन देने वाले पंडित मदन मोहन मानवीय जी ने दिल्ली अधिवेश के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिए कहते हैं। मानवीय जी न्याय के सिद्धांत के भी समर्थक हैं। वे चाहते थे कि कोई नागरिक अपने धर्म, लिंग, सम्प्रेक्षण और जाति से अयोग्य न समझा जाए। वह भाईचारे की भावना एवं जनता में समानता को विकसित करने। मालवीय जी कार्यपालिका को मनमाने या ज्यादा अधिकार देने के विरूद्ध थें राजनीति जागरूकता से परिचित होने के लिए वह एशिया भी गए। अपने अध्यक्षीय भाषा के लिए उन्हें बहुत प्रशंसा भी मिली। वह कानून के शासन की पक्ष में थे।

स्वतंत्रता, समानता व न्याय

रॉलेट एक्ट को यह काला कानून कहते जिसमें वकील, दलील या अपील के लिए कोई जगह नहीं थी। मालवीय जी ने आजादी का गला घेंटना व सरकार द्वारा अराजकता सत्ता प्राप्त करने की कोशिश बताते है। उनका दिया गया ऐतिहासिक भाषण से उनमें स्वतंत्रता के विश्वास का पता चलता था। यह भाषण सन् 1918 में रॉलेट एक्ट का विरोध करने हेतु इंडियन लेजिस्लेटिव काउंसिल में दिया गया। सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार यह साढ़े चार घंटे का भाषण भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का सबसे लंबा भाषण था। उन्होंने अंग्रेज सरकार को यह धमकी भी दी कि यदि वह दिल पास किया गया तो भारतीय निवासी एक बड़े पैमाने पर आंदोलन शुरू करेंगे जिसकी कोई सीमा नहीं होगी। उनका मानना था कि यदि हर मनुष्य भाई-चारे, प्रेमभाव की भावना रखे तो भारत के लोगों की न्यायसंगत का विरोध कोई नहीं कर पाएगा। हर मानव समान रूप से जरूरी है और कानून भी है। वह सरकार के 'गुड गवर्ननेस से सहारा लेने को कहते थे। उन्होंने ट्रायल कोर्ट के फैसलों के खिलाफ अपील करने की मांग भी करी थी। इनका विश्वास ईश्वर की सवोच्चता में रहा। मानवीय जी दिल्ली अधिवेशन मुसलमान एक समान दृष्टि से देखने वाले मालवीय जी आत्मनिर्धरण के सिद्धांत में विश्वास।

क्षेत्रवाद के परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है जिसके चलते प्रत्येक क्षेत्र के हित समूह अर्थात् नेता,उद्योगपति तथा राजनीतिज्ञ अपने-अपने क्षेत्रीय विकास को ही प्राथमिकता देते नज़र आते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा क्षेत्रीय विकास के वायदे कर लोगों के धार्मिक विश्वास का प्रयोग वोट बैंक के तौर पर किया जाता है जिसके चलते देश में सांमप्रदायिकता एवं हिंसा का माहौल पैदा होता है। क्षेत्रवाद के कारण देश में अलगाववाद की भावना को बढ़ावा मिलता है, समय- समय पर हमें इसके कुछ उदाहरण भी देखने को मिले हैं जैसे-असम में अल्फा गुट का गठन, मिज़ोरम में मिज़ो नेशनल फ्रंट की गतिविधियाँ इत्यादि क्षेत्रवाद एवं अलगाववाद की भावना से ही प्ररित हैं।

सन् 1918 में दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन के समय में मोटफोर्ड रिपोर्ट का उल्लेख किया। उनके भाषण में उन्होंने आत्मनिर्धारण का सिद्धांत भारत में लागू करने की आशा व्यक्त करी। मालवी जी कहते हैं कि स्व निर्धारण का सिद्धांंत लागू करे। स्वशासन की गारंटी भी दिलाई जाए। भारत के स्वशासन को यह सभी तर्क मजबूत करने थे। उन्हें अध्यक्षीय भाषण को भारतीय प्रेस से उनके अद्भत भाषण के लिए बहुत प्रशंसा मिली। महिलाओं को राष्ट्रीय जीवन में भाग लेने के लिए प्रेरित भी उन्होंने ही किया। कांग्रेस को आमत्रण की पार्टी कहने वाला तथ्ज्ञा किसानों को प्रेरित करने वाले मालवीय जी ही थे। उनकी प्रशंसा देशभर आज भी की जाती है। 'न्यू टाइम्स' ने उन्हें नए भारत का अवतार कहा है। योद्ध में उनके योगदान एवं हिंदू-मुस्लिम की एकता प्र उनके विश्व प्रसिद्ध विचारों का उल्लेख 'टाइम्स आफ इंडिया' ने भी किया। सुत्रें के अनुसार मुसलमानों की तरफ उनकी रणनीतिक पहल उनके अलावा शायद ही किसी और को संतुष्टि प्रदान कर सके।

संवैधानिक आंदोलन में विश्वास

मालवीय जी स्वतंत्रता व संवैधानिकता में विश्वास रखते थे। उन्होंने यह बताया था कि यदि ब्रिटिश स्वीकार करने की समय बदल गया है त्यों ही वह हित में रहेगी। लोगों की मस्तिष्क एवं दिल में यही नई भावनाओं का संचार उन्होंने किया था। इस भावना को और जागरूक करने के लिए उन्होंने चीन और जापान से प्रेरणा भी ली है। उन्होंने देश में राष्ट्र एकता जनभावना और संसाधनों को विकसित करने के अपील की थी। अर्थात् उत्साह उन्होंने कभी तोड़ने नहीं दिया। वह जितना मजबूत रहे उन्हें लाभ भी उतना ही मिला। उन्होंने आंदोलन खूनी, अवैधानिक आंदोलन भी कराए। लोगों को लाभ लेने के लिए लोगों को चिंतन व कर्म में मजबूत रहने की प्ररेरणा दी थी। उन्होंने 1887 में कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में भाषण भी दिया। गुरू गोविंद सिंह का कार्य के प्रति समर्पण व अपने शिष्यों में एकरूपता का स्वभाव उन्हें बहुत पंसद आया। सन् 1908 में उन्होंने लखनऊ, उत्तर प्रदेश की राजधानी में भाषण देते हुए साफ-सफाई, ज्ञान और आर्थिक विकास को बढ़ाने का निवेदन किया। उन्होंने इस बात प्र प्रकाश दिया कि यदि धार्मिक भावनाओं किया गया काम हमेशा स्थायी होता है। उन्होंने कहा कि देश की तरक्की के लिए शैक्षिक तथा औद्योगिक गतिविधियाँ भी जरूरी थी। मालवीय जी यह पाप मानते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य के हिस्सों में जनता को मिले अधिकार व सत्ता की तरह वह अपने लिए भी समान अधिकार व शक्ति का मांग करे। मालवीय जी ने अंग्रेजाेंं को यह विश्वास दिलाया कि उदारतापूर्वक मांगों की स्वीकार करने के अलावा उनके पास और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। उनके इन्हीं कार्य और मेहनत के लिए भारत में कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष

तीसरे अधय में 'दर्शन के इतिहास', ईश्वर, धर्म, अहिंसा, जाती व्यवस्था, महिलाओं की स्थिती व उनकी भूमिका, गौरक्षण एवं दलित वर्गों की स्थिति वगैरह पर उनके विचार जानने का प्रयास किया गया है। मालवीय जी जब तक जिंदा रहे वह अपने लोगों के लिए पहेली बने रहे। उनके निर्णय उनक ेमित्र व दूश्मन दोनों को चौंका देते थे।

संदर्भ:

राज से स्वराज्य – रामचन्द्र प्रधान, केंद्रीय माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली 2016

बैरन, हैरॉल्ड एम, 'द वेव ऑफ रेसिज़्म', इन लुइस एल. नॉलस एंड कैनैथ प्रैविट, इन्सटीटयुश्नल रेसिज़्म इन अमेरिका (प्रेन्टिस . हॉल, इंक.), 1969

क्रिस्टॉफर एडले जूनियर, 'फॉर्म ओवर सबस्टैन्स, नॉट ऑल ब्लैक एंड व्हाईट : अफरमेटिव ऐक्शन, रैस एण्ड अमेरिकन वैल्यूज़, प्स्वए हावर्ड लॉ रिव्यु, 1645, में 1997

फ्रैन ऐन्सले 'अफरमेटिव ऐक्शन' डाईवर्सिटी ऑफ इम्पैक्ट ऑफ एलिमिनेटिंग अफरमेटिव ऐक्शन' 27, गोल्डन गेट यूनिवर्सिटी लॉ रिव्यु 313, स्प्रिंग 1997

Khuntia, J., & Bajaj, R. (2015). आज के युग में कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता. *VEETHIKA-An International Interdisciplinary Research Journal*, *1*(1), 102–106. https://doi.org/10.48001/veethika.2015.01.01.015